इस्लामी ज़िन्दगी के आदाब

इस्लामी शरीअ़त ने कुछ आदाब पेश किये हैं जिस पर अ़मल करने पर उसने मुसलमानों को उभारा है ताकि वे इस्लामी शख़्सियत (व्यक्तित्व) से आरास्ता (सुसज्जित) हो सकें।

स़ाफ़-सुथराई के आदाब

(1). पाकीज़गी ईमान में से है :

इस्लाम में त़हारत (पाकीज़गी) को ईमान का ह़िस्स़ा कहा गया है। त़हारत दो क़िस्म की होती है। **पहली, अ़क़ीदे की पाकीज़गी या'नी अपने नफ़्स को या अपनी रूह को शिर्क, कुफ़्र, निफ़ाक़ (ईमान के मामले में दोरुख़ापन रखना) व अल्लाह की नाफ़र्मानी की गन्दगी से पाक करना। दूसरी, जिस्म की पाकीज़गी या'नी अपने जिस्म पर लगी गन्दगी को स़ाफ़ करना।** नबी करीम (ﷺ) ने मोमिनों को हर वक़्त पाक रहने की ताकीद की है। जब ग़ुस्ल करना ज़रूरी हो तब ग़ुस्ल किया जाए, अगर मुमकिन हो सके तो पूरा दिन वुज़ू से रहा जाए। पाँच वक़्त की नमाज़ से पहले वुज़ू करना फ़र्ज़ है, इसके बिना नमाज़ नहीं होती।

(2). मिस्वाक करना :

ह़ज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया, **'अगर मेरी उम्मत के लिये मशक़्क़त की बात न होती तो मैं उन्हें हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक करने का हुक्म देता।'** (सुनन अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती हैं कि **रसूलुल्लाह (ﷺ) रात में जब कभी भी सोकर उठते तो वुज़ू से पहले मिस्वाक किया करते थे।** (अबू दाऊद)

ह़ज़रत अबू बुर्दा (रह़ि.) अपने वालिद ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि वे रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास सवारी माँगने के लिये गये तो उन्होंने देखा कि **रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी ज़बान पर मिस्वाक रगड़ रहे थे।** (अबू दाऊद)

इन हदीषों से ज़ाहिर होता है कि हर मुसलमान को मिस्वाक के ज़रिये अपने दाँतों की और ज़बान की स़फ़ाई करनी चाहिये ताकि उसके मुँह से बदबू न आए।

(4). हँसी मज़ाक में किसी को तकलीफ़ पहुँचाना मना है :

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया, **'किसी मुसलमान के लिये हलाल नहीं हैं कि किसी मुसलमान को घबराहट में डाले।'** (मुस्नद अह़मद)

या'नी हंसी-मज़ाक़ के नाम पर ऐसी कोई हरकत नहीं करनी चाहिये कि इन्सान ख़ौफ़ज़दा हो जाए या उस पर घबराहट तारी हो जाए। जैसे मज़ाक़ के त़ौर पर किसी नुक़्सान की बात कह देना वग़ैरह।

ता'ज़ियत के आदाब

(1). मुर्दे के घर वालों की तसल्ली और उनके ग़म को हल्का करने के लिये ता'ज़ियत (सांत्वना देने) का इस्लाम ने हुक्म दिया है :

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, **'जो मोमिन अपने किसी भाई की मुसीबत में ता'ज़ियत करता है, अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसे करामत का जोड़ा पहनायेगा।'** (सुनन इब्ने माजा)

(2). मुर्दे के घर वालों के लिये दुआ करना और उन्हें स़ब्र करने और ष़वाब की उम्मीद रखने पर उभारना :

हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ बैठे थे कि आपके पास आपकी किसी बेटी का क़ासिद (संदेशवाहक) आया कि वह आपको अपने बेटे को देखने के लिये बुला रही हैं जो जान निकलने की ह़ालत में है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उस आदमी से कहा, **'वापस जाकर उन्हें बतला दो कि कुछ अल्लाह ने ले लिया वह बेशक अल्लाह ही का है और जो कुछ उसने अ़त़ा किया है वह भी उसी का ही है, और हर चीज़ का उसके पास एक तयशुदा वक़्त है इसलिये उनसे कहो कि वह स़ब्र करें और अल्लाह से अज्र व ष़वाब की उम्मीद रखें।'** आपकी बेटी ने क़ासिद को यह कह कर दुबारा भेजा कि उन्होंने क़सम खा ली है कि आप ज़रूर उनके पास आयें। इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) उठ खड़े हुए और सअ़द बिन उबादा और मुआज़ बिन जबल भी आपके साथ हो लिये। बच्चे को आपके सामने पेश किया गया, उसकी साँस ज़ोर-ज़ोर से चल रही थी गोया वह पुराने मश्कीज़े में है। यह देखकर आप (ﷺ) की आँखों से आँसू जारी हो गये। सअ़द ने कहा, **'ऐ अल्लाह के रसूल यह क्या है?'** आपने फ़र्माया, **'यह वह शफ़क़त और रह़मत है जिसे अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के दिलों में डाल दिया है, और अल्लाह तआला अपने बन्दों में से शफ़क़त व मेहरबानी करने वालों पर रह़म करता है।'** (स़ह़ीह़ मुस्लिम)